मेरा एक सपना है

कहानी मार्टिन लूथर किंग की

लेखन: नील टॉन्ज, चित्रांकन: एलिसन अस्टिल

भाषांतर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

मेरा एक सपना है

कहानी मार्टिन लूथर किंग की

लेखन: नील टॉन्ज, चित्रांकन: एलिसन अस्टिल

भाषांतर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

अध्याय 1

मार्टिन लूथर किंग ने होटल के कमरे की खिड़की का परदा एक ओर सरकाया। अपनी आँखों को रगड़ा। इतने सारे भाषण। इतनी बैठकें। दुनिया के सबसे मुश्किल कामों में से एक था उनका काम - काले लोगों के प्रति गोरों के नज़रिए को बदलने की कोशिश करना।

अपने ख़यालों में गुम मार्टिन ने अचानक एक काले लड़के को दौड़ कर सड़क पार करते देखा। उसके आँसू उसके गालों पर बह रहे थे और मुँह खुला था, मानो दर्द भरी चीख निकल रही हो। सड़क पार करते ही वह पटरी पर बैठ गया और अपना सिर हाथों में छिपा लिया।

इस लड़के को भला क्या हुआ? मार्टिन सोचने लगा। वह अपने कमरे से निकला। तेज़ी से सीढ़ियों से उतरा और लड़के की ओर बढ़ा।

"क्या परेशानी है बेटे?"

बैन ने भीगी आँखों से उस लम्बे, सुडौल व्यक्ति को देखा। जिनकी आवाज़ गहरी-गंभीर होने के साथ कोमल और सदय भी थी।

बैन को यह सूझ नहीं रहा था कि वह बात कहाँ से शुरू करे। पर शब्द खुद ब खुद निकल पड़े।

"पहले हम दोस्त थे। पर तब वे मुझे 'काला-कलूटा' कहने लगे। कहने लगे कि वे मुझसे बेहतर हैं क्योंकि वे गोरे है। और तब हम झगड़ पड़े। अब हम दोस्त नहीं रह सकते।"

"ज़रा सा थमो बेटा। लो पहले अपनी आँखें पोंछो।" मार्टिन ने बैन को एक बड़ा सा रूमाल दिया।

"तुम्हारा नाम क्या है?" मार्टिन बैन के पास ही पटरी पर बैठ गया मानो दोनों पुराने दोस्त हों।

"बैन। बैन टेयलर मॉर्गन।"

"तो बैन, बहुत सालों पहले मैं तुम्हारी ही उम्र के एक नन्हे को जानता था। उसका नाम था मार्टिन। वह भी तुम्हारी तरह झगड़े फसादों में उलझता था।"

बैन ने रोना बन्द किया और सीधे मार्टिन लूथर किंग के चेहरे की ओर ताकने लगा।

"क्या वह लड़ने-झगड़ने में अच्छा था?" उसने जानना चाहा।

"हाँ, पहले तो अच्छा ही था, क्योंकि उसे भी तुम्हारी तरह तकलीफ हुआ करती थी। पर बाद में उसे समझ आया कि झगड़ने से ज़्यादा लोगों को तकलीफ पहुँचती है। इसलिए वह अच्छा बोलने वाला बना," मार्टिन ने समझाया।

बैन को इस बारे में और जानना था। "इस मार्टिन के बारे में और बताइए ना," उसने कहा।

अध्याय 2

जब मार्टिन छह बरस का हुआ तब उसे पहली बार यह अहसास हुआ कि काला होने का मतलब अलग होना होता है। स्कूल में यह उसका पहला दिन था और वह अपने दोस्तों को सब कुछ बताने को बेताब था। उसके दोस्त गोरे थे और उन्होंने भी तब ही स्कूल जाना शुरू किया था। "ज़रा-सा थमो जनाब!" उसकी माँ ने स्कूल से लौटने पर उसे रोक कर कहा। "देखो बेटा, हो सकता है कि वे तुम्हारे साथ अब खेलना न चाहें।"

मार्टिन उलझन में पड़ गया। उसकी माँ ने आगे जोड़ा, ''तुम लोग अब तक दोस्त रहे हो पर अब...ख़ैर यह हमेशा याद रखना कि तुम किसी भी गोरे इन्सान से कम नहीं।'' मार्टिन माँ की बात ठीक से समझ तो नहीं सका, पर उसने जो कहा वह उसे हमेशा याद रहा।

मार्टिन और उसके गोरे दोस्तों के बीच दूरियाँ बढ़ती गईं। मार्टिन ने जल्द ही यह सीख लिया कि काले और गोरे लोगों के साथ अलग-अलग बरताव किया जाता है। आठ बरस का मार्टिन अपने पिता के साथ जूतों का जोड़ा खरीदने दुकान पर गया। एक गोरा सहायक उनकी ओर बढ़ा।

"मैं आपकी ज़रूर मदद करूंगा, पर आप दुकान के पिछले हिस्से में आ जाएं," सहायक ने कहा। मार्टिन के पिता ने सहायक की आँखों में सीधे देख कहा, "अगर आप अपनी सेवाएं यहाँ नहीं दे सकते, तो हमें उसकी दरकार नहीं है।" तब मार्टिन और उसके पिता दुकान से निकल गए।

मार्टिन को अपने जूते मिले ज़रूर, पर उस दुकान से जहाँ उनके साथ सम्मान का बरताव किया गया। बात इतनी भर थी - लोगों को सम्मान देने की। पर उस समय कई गोरे ऐसा नहीं करते थे।

अध्याय 3

जैसे-जैसे मार्टिन बड़ा होने लगा उसने सीखा कि लड़ने-झगड़ने से तकलीफ कम नहीं होती और बढ़ती है। समस्या पर बातचीत करना हमेशा बेहतर होता है। पंद्रह साल की उम्र में वह कॉलेज गया और वहाँ भाषण देने की कला में माहिर हो चला। एक रात कॉलेज के कुछ दोस्तों के साथ वह बस से घर लौट रहा था। बस चालक ने उन्हें अपनी सीटों से उठ कुछ खड़े हुए गोरों को जगह देने को कहा। ''चलो, फौरन खड़े हो जाओ!'' चालक चिल्लाया। मार्टिन को यह अच्छा तो नहीं लगा फिर भी उसने वह किया जो उससे कहा गया।

कॉलेज की छुट्टियों के दौरान मार्टिन ने फुटकर काम किए। यहाँ भी उसने पाया कि कालों को गोरों से कम भुगतान किया जाता है। तब भी जब दोनों समान काम कर रहे हों।

कॉलेज पूरा करने के बाद मार्टिन यह तय नहीं कर पा रहा था कि उसे आगे क्या करना चाहिए। तब एक दिन उसने कॉलेज के प्रिंसिपल को उनके प्रवचन के दौरान यह कहते सुना कि अमरीका के दक्षिणी राज्यों में लोगों के नस्लवादी नज़रिए को बदलने की सख्त ज़रूरत है। उनकी बात सीधे मार्टिन के दिल में उतर गई। उसने सोचा कि पादरी बन प्रवचन देने से कालों और गोरों को एक-दूसरे के करीब लाया जा सकता है। उसने फैसला कर लिया था।

1954 में मार्टिन मौंटेगोमरी, अलाबामा के बैप्टिस्ट गिरजे का पादरी बना। उसने संकल्प कर लिया था कि वह गोरों को यह समझा सकेगा कि उन्हें कालों के साथ अन्याय का बरताव नहीं करना चाहिए। यह काम मार्टिन बातचीत और प्रवचन के सहारे करना चाहता था।

तब 1 दिसम्बर 1955 के दिन उसका जीवन हमेशा के लिए बदल गया।

अध्याय 4

एक छोटे कद की काली वृद्धा ने मार्टिन की ज़िन्दगी बदल डाली। यह थकी हुई वृद्धा भेदभाव से उकता चुकी थी। इस वृद्धा - रोज़ा पार्कर को मौंटेगोमरी के एक बस परिचालक ने कहा कि वह एक गोरे के लिए अपनी सीट खाली कर दे। पर उसने मना कर दिया, बड़ी शान्ति और शिष्टता से। पर वह अपनी जगह से हिली नहीं। इस घटना से पहले अपने अधिकारों पर अड़ने पर कुछ काले लोगों की हत्या तक की जा चुकी थी। चालक बहस बढ़ाना नहीं चाहता था, सो उसने पुलिस को फोन किया। रोज़ा गिरफ्तार कर ली गई।

उन दिनों भोजनालयों में गोरों और कालों की बैठने के स्थान अलग-अलग हुआ करते थे। पार्क में उनकी बैंचें अलग होती थीं। टॉयलेट तक अलग थे। खैर बस में बैठे अन्य काले लोगों ने कुछ नहीं किया। हो सकता है कि वे इस भेदभाव के इस कदर आदी हों कि उन्होंने विरोध नहीं किया। या फिर वे इस वाकये से सहम गए हों।

रोज़ा की गिरफ्तारी की खबर जंगल की आग की तरह काले समुदायों में फैल गई। कई काले इस किस्म के भेदभाव और अन्याय से आजिज़ आ चुके थे। उत्तरी राज्यों के कई गोरे उनके समर्थन में थे। दक्षिण में आर्केन्सास के कस्बे लिटिल रॉक में हुए प्रदर्शन के बाद हाल ही में सरकार ने काले और गोरे स्कूलों को पृथक रखने पर पाबन्दी लगाई थी।

बहरहाल समानता के अभियान से जुड़े लोगों को लगा कि मौंटगोमरी में विरोध प्रदर्शन करने से देश भर में बदलाव की प्रक्रिया तेज़ हो सकेगी। मार्टिन से कहा गया कि वह इस अभियान की अगुवाई करे। मार्टिन इस बार में फैसला नहीं कर पाया। वह तो एक पादरी बन कर मौंटगोमरी आया ही था। उसे लगा कि उसे अपने गिरजे के काम को प्राथमिकता देनी चाहिए। साथ ही उसे यह भरोसा भी नहीं था कि काले लोग इस अभियान को महीनों तक खींच पाएंगे। पर रैवरैण्ड एबरनैथी ने, जो बाद में मार्टिन के करीबी दोस्त बने, मार्टिन को अभियान की अगुवाई करने पर मना लिया।

अध्याय 5

सबसे पहले तो मार्टिन ने यह तय कि बस कम्पनी पर ही पलट-वार करना चाहिए। अभियान की ओर से काले लोगों को 40 हज़ार पर्चे भेजे गए जिसमें उनसे गुज़ारिश की गई कि वे बसों का इस्तेमाल बन्द कर दें। उनका बहिष्कार करें। वे अपनी गाड़ियों में दूसरों को बैठाएं। काले टैक्सी चालक बस के किराए की राशि पर लोगों को उनके गन्तव्य पर पहुँचाने को राज़ी हो गए।

ऐसा लगा मानो तरीका काम कर रहा है। बहिष्कार के पहले दिन जब मार्टिन शहर में घूमा तो उसने पाया कि केवल कुछ ही लोग बसों में सवारी कर रहे थे।

उस शाम उसने 4000 से ज़्यादा लोगों के सामने भाषण दिया। उसने कहा - "हम इस अलगाव से थक चुके हैं... हम इधर-उधर लतियाए जाने से थक चुके हैं ... विरोध के अलावा हमारे पास कोई चारा ही नहीं बचा है। हमने अब तक असीम धीरज दिखाया है। पर आज रात हम आज़ादी और न्याय के लिए यहाँ आए हैं।"

इस बैठक में तय किया गया कि विरोध तब तक जारी रहेगा जब तक जीत हासिल न हो जाती और कालों के साथ दूसरे दर्जे के नागरिकों का सा व्यवहार बन्द नहीं हो जाता।

अध्याय 6

इधर रोज़ा को आखिरकार 10 डॉलर का जुर्माना ले छोड़ दिया गया। पर इस घटना और उसके बाद जो कुछ हुआ उस पर गोरों की नाराज़गी भरी प्रतिक्रिया ने मार्टिन को सकते में डाल दिया। उसे फोन और खतों में जान से मार डालने की धमकियाँ मिलने लगीं। उसके पिता और दोस्तों ने सलाह दी कि उसे पीछे हट जाना चाहिए क्योंकि उसकी जान को खतरा है। मार्टिन खुद भी डरा, पर विरोध की अगुवाई करना उसकी ज़िम्मेदारी थी। एक रात तो मार्टिन के घर पर बम तक फेंका गया। उस वक्त मार्टिन घर पर नहीं था, पर उसकी पत्नी कोरेटा और नन्ही बिटिया हमले में बाल-बाल बचे।

इसके बावजूद मार्टिन अपने हमलावरों को माफ करना चाहता था, क्योंकि उसका मानना था कि हिंसा से लोगों के दिलो-दिमाग को नहीं बदला जा सकता। बहरहाल इस विरोध की ख़बर फैली और दुनिया भर से तमाम लोग अभियान में मदद के लिए आगे आए।

पैसा भी आया। पर मार्टिन को डर था कि सर्दियों के आने पर बहिष्कार ठप्प हो जाएगा और काले लोग बसों का फिर से इस्तेमाल करने लगेंगे।

बस कम्पनी ने मार्टिन के विरुद्ध कानून का सहारा लेने की कोशिश की। उन्होंने कहा कि बहिष्कार गैर-कानूनी है। मामला अदालत में पहुँचा। लगने लगा कि अभियान दबा दिया जाएगा। मार्टिन अदालत में बैठा था कि एक खबरनवीस ने उसे एक पर्ची पकड़ाई। उस पर लिखा था कि अमरीका की सबसे बड़ी अदालत, सुप्रीम कोर्ट, ने यह फैसला सुनाया है कि बसों में कालों और गोरों को पृथक करना कानून के विरुद्ध है। मार्टिन मुकदमा जीत गया था।

"खुदा ने अमरीका में आज़ादी और न्याय के संघर्ष के लिए मौंटगोमरी को चुना है," मार्टिन ने अदालत के बाहर खड़े खबरनवीस से कहा।

एक बुज़ुर्ग काली महिला ने बात और सरल तरीके से रखी। उसने कहा "पहले मेरी आत्मा थकी और पैर आराम में हुआ करते थे। अब मेरे पैर ज़रूर थकते हैं पर आत्मा को चैन है।"

अध्याय 7

मार्टिन अब दुनिया भर में प्रसिद्ध हो गया था। उसके द्वारा आयोजित शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शनों, धरनों और आज़ादी के गीतों को हर जगह दोहराया जाने लगा। लॉस एंजलीस में उसकी बात सुनने 25,000, तो शिकागो में 10,000 लोग इकट्ठा हुए। डैट्राइट में आयोजित 'फ्रीडम वॉक' में मार्टिन ने 40,000 लोगों का नेतृत्व किया।

"मार्टिन!" अचानक एक आवाज़ ने टोका। "चलने का समय हो गया है," होटल की बाल्कनी से झांक एक व्यक्ति ने कहा।

"मुझे जाना होगा। तुमसे बात कर अच्छा लगा बैन। बस यह याद रखना कि तुम्हें खुद पर भरोसा बनाए रखना है और यह भी कि लड़ाई-झगड़े से समस्या सुलझती नहीं है।"

मार्टिन मुस्कुराया, मुड़ा और उस दिशा में बढ़ गया जहाँ से आवाज़ दी गई थी। बैन भी पटरी से उठा और मार्टिन को जाते देखता रहा।

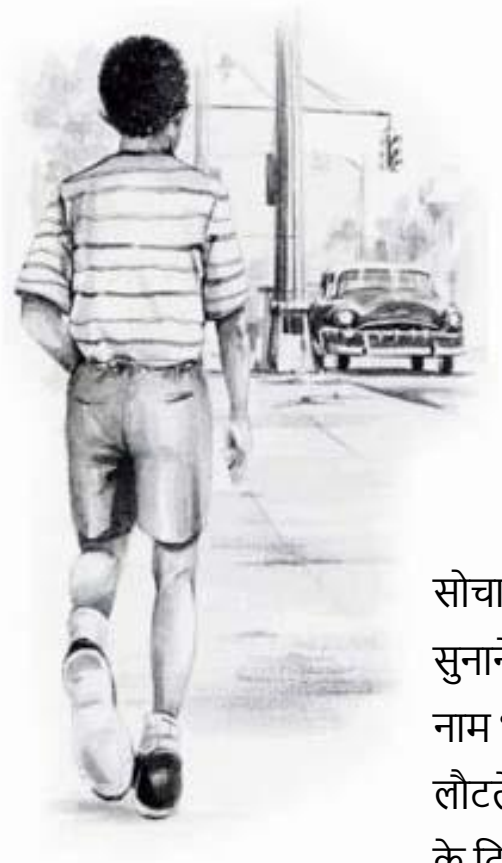

अजीब बात है, उसने सोचा, मार्टिन की कहानी सुनाने वाले इस इन्सान का नाम भी मार्टिन है! घर लौटते समय यह ख़याल बैन के दिमाग में घूमता रहा।

"कहाँ गायब थे बैन ?" पिता कूल्हों पर हाथ टिका खड़े थे। वे नाराज़ लग रहे थे। "तुम्हें पता था कि हमें एक बेहद ज़रूरी बैठक में जाना था। अब हम देर से पहुँचेंगे," पिता ने अधीर हो कहा। पर बैन जानता था कि वे उसे माफ कर देंगे।

पता नहीं कैसी बेकार की बैठक होगी, बैन ने मन में सोचा। वह वहाँ कतई जाना नहीं चाहता था। पर पिता ने कहा था कि वह ज़रूरी है। सो वे वाशिंगटन शहर के केन्द्र की ओर बढ़ चले।

अध्याय 8

वे पैन्सिलवेनिया एवैन्यू पर बढ़ रहे थे। बैन की आँखें अचरज से फैलने लगीं। उसने सोचा आज तो पूरा का पूरा अमरीका, काला और गोरा, यहीं इकट्ठा है। भीड़ में धक्कम-पेल हो रही थी। बैन ने पिता का हाथ ज़ोर से पकड़ा। उसे डर था कि वह बिछड़ न जाए।

तब मानो किसी के इशारे से, उस बड़ी भारी भीड़ में चुप्पी छा गई।

"क्या हो रहा है डैड? मुझे भी देखना है!"

बैन के पिता ने उसे कमर से पकड़ कर उठाया और अपने कंधों पर बैठा लिया। बैन ने अचरज से साँस खींची। वहाँ हज़ारों लोग थे। इतने लोग बैन ने पहले कभी देखे ही नहीं थे। ये सब यहाँ क्यों आए होंगे, उसने सोचा।

बैन ने अपना सिर उस ओर घुमाया जिस ओर भीड़ ताक रही थी। तब वह चौंक गया, क्योंकि भीड़ का ध्यान एक काले व्यक्ति पर टिका हुआ था। यह वही इन्सान था जिसने घंटे भर पहले बैन से इतने स्नेह से बात की थी।

बैन के इस नए दोस्त मार्टिन लूथर किंग ने पोडियम के किनारों को थामा और अपना भाषण शुरू किया। मौजूद जन समूह उनके एक-एक शब्द को ध्यान से सुन रहा था।

“मेरा एक सपना है कि किसी दिन जॉर्जिया की लाल पहाड़ियों पर पूर्व गुलामों के बेटे और गुलामों के पूर्व मालिकों के बेटे भाईचारे की मेज़ पर एक साथ बैठ सकेंगे।

“मेरा एक सपना है कि मेरे चार नन्हे बच्चे एक ऐसे देश में जियेंगे जहाँ उनकी कीमत उनके चाम के रंग से नहीं, उनके चरित्र के गुणों से आँकी जाएगी ...

"... जहाँ छोटे काले लड़के और छोटे गोरे लड़के भाइयों की तरह हाथ थामे साथ-साथ चलेंगे।

यह वह दिन होगा जब खुदा के सारे बन्दे 'लैट फ्रीडम रिंग' (आज़ादी को गूँजने दो) को नए अर्थ के साथ गा सकेंगे।

''जब हम आज़ादी को हरेक राज्य के हरेक गाँव और हरेक शहर में गूँजने देंगे, तब वह दिन भी करीब आने लगेगा जब ख़ुदा की औलादें - काले व गोरे - एक दूसरे का हाथ थाम उस पुराने नीग्रो आध्यात्मिक गीत के शब्द गा सकेंगे:

आख़िरकार आज़ाद हूँ,
आख़िरकार आज़ाद हूँ
या मेरे परवरदीगार
आख़िरकार मैं आज़ाद हूँ!"

जब मार्टिन लूथर किंग ने अपना भाषण ख़त्म किया तो बैन ने अपनी नज़र अपने इर्दगिर्द दौड़ाई। लोग चुप थे, कई लोगों की आँखों से आँसू बह कर गालों पर लुढ़क रहे थे।

"ये वही हैं!" बैन ने पिता से ज़ोर से कहा। "मैं उन्हें जानता हूँ।" घर की ओर कदम बढ़ाते हुए बैन ने पिता को मार्टिन लूथर किंग के बारे में बताया - जिसने अपने जीवन को बदल डाला था।

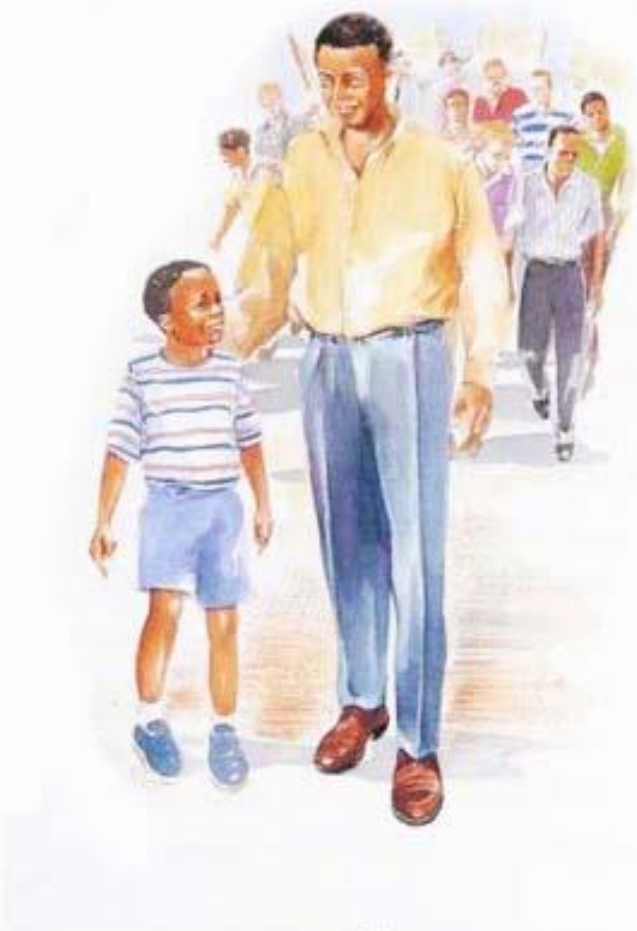

मार्टिन लूथर किंग के साथ आगे क्या हुआ?

वाशिंगटन में उनके भाषण के बाद राष्ट्रपति लिन्डन जॉनसन ने मार्टिन को व्हाइट हाउस आने का आमंत्रण दिया, जहाँ उन्होंने 1964 के सिविल राइटस् एक्ट (नागरिक अधिकार कानून) पर दस्तख़त किया। इस कानून ने अमरीका भर में रंग के आधार पर भेदभाव पर रोक लगाई। इसी साल मार्टिन को नोबेल शांति पुरस्कार से नवाज़ा गया। मार्टिन ने इसके अलावा भी काले लोगों के लिए तमाम दूसरी जीतें हासिल कीं। पर तब 4 अप्रेल 1968 को एक गोरे, जेम्स अर्ल रे ने गोली दाग कर उनकी हत्या कर दी। रे को बाद में कैद कर लिया गया।

पर अमरीका में नागरिक अधिकार आंदोलन मार्टिन की हत्या के साथ खत्म नहीं हो गया। 1960 के दशक के बाद कई काले, दक्षिणी राज्यों में मेयर के पद पर चुने गए हैं। अमरीका की सरकार में अनेक काले प्रतिनिधि हैं। कई वकील, शिक्षक, प्रसारक और बैंकर बन सके हैं। इन पदों पर पहले किसी काले व्यक्ति का होना संभव ही नहीं था। अमरीका में भेदभाव गैर-कानूनी है पर इसका मतलब यह नहीं कि वह मिट चुका है। पर बीसवीं शताब्दी में नस्ल के बारे में लोग कैसे सोचते हैं और कालों के साथ कैसा बरताव किया जाना चाहिए इसे मार्टिन लूथर किंग ने बदला दिया है।

मार्टिन लूथर किंग (1929 - 1968)